International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 21-22

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में निम्नवर्गीय पात्रः

कविता गुप्ता
शोधार्थी, (हिन्दी विभाग), रॉची विश्वविद्यालय, रॉची, झारखण्ड, भारत।

प्रस्तावना

ज्ञान के सागर का कोई अंतिम बिंदु नही है। शोध परक अध्ययन में शोधार्थी जितनी गहराई से कार्य करेगा उसके लिए ज्ञान के सागर में गोते लगाना आसान हो जायेगा। मैत्रेयी पुष्पा हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक ऐसी शसक्त रचना कार के रूप में जिन्होंने आधुनिक युग में नारियों को वाणी प्रदान की है।

लोकप्रिय उपन्यासकार के रूप मे मैत्रेयी पुष्पा निम्नवर्गीय नारियों के बारे में अपनी लेखनी चलाकर उन्हें साहित्य जगत में स्थान दिया है। 'अल्मा कबूतरी की नायिका अल्मा एक निम्नवर्गीय पात्र है परंतु कबूतरा जाति की जो विशेषताएँ होती है उसे लेखिका ने इस पात्र के माध्यम से उजागर नही कि ये है कारण यह है कि वह प्रारंभ से ही शहर में रही है। लेखिका ने अल्मा के सौन्दर्य का वर्णन बार–बार किया है। पूरे उपन्यास में लेखिका ने अल्मा को थोड़ा भी सुख प्रदान नही किया। जरा–सा भी सुख मिला नही कि दुखो का पहाड़ टूट पड़ता है। अध्यापक होने के बावजूद अल्मा के पिताजी को कबूतरा जाति के होने का अभिशाप मिलता रहा है। पुष्पा जी ने इस उपन्यास के पात्रो के माध्यम से आदिवासी जीवन शैली का सभ्य समाज द्वारा शोषित, घृणित एवं अपराधिक पृष्ठ भूमि को प्रकाशित किया है साथ ही घृणित सत्ता, राजनितिक पर भी करारा व्यंग्य किया है। 'अल्मा के चरित्र के द्वारा नारी के सहन शक्ति, बुद्धिमत्ता एवं विवेक शीलता का भी परिचय दिया है अल्मा के साथ इतनी बार खिलवाड किया गया कि इसे अपने ऊपर शर्म नही आती थी। उसकी जिन्दगी में सूरजभान, परसाराम तो कभी श्रीराम शास्त्री ने कोई कसर नही छोड़ी श्रीराम शास्त्री सम्पर्क में आने के बाद अल्मा ऐसी बदली कि लेखिका ने एक पुराना मुहावरा ही उसके लिए फिट कर दिया है। यथा "अल्मा परामर्श में किसी दासी से, खिलाने–पिलाने में माता सी, और सेज पर रम्भा सी।"[1]

संघर्षशील जीवन जीती हुई एक दलित स्त्री का पदार्पण राजनीति में होता है। अपनी मुक्ति संघर्ष को और सुदृढ़ करते हुए अल्मा जैसी पात्र समाज को दलित स्त्रीयों की वास्तविक परिस्थिती से परिचित करवाती है। लेखिका ने जहाँ अल्मा के चरित्र की शुरूआती दौर में कोमलता दिखाया है, वहीं बाद में दृढ़ता भी। कहते है कि समपर्ण ही नारी का दूसरा नाम है। और अल्मा इसका जीता जागता उदाहरण है। अनक खामियों के बावजूद अल्मा हमारे समक्ष आदर्श प्रस्तुत करती है। अल्मा एक परित्यक्ता है, प्रेमी से लेकर समाज के वासिन्दे तक उसका शारीरिक भोग कर त्याग देते हैं। उपन्यास के अंत में अल्मा पाठक के समक्ष 'बोल्ड' युवती के रूप में आती है और सामाजिक रीति रिवाजों और नियम कानूनों को तोड़ स्त्री होने के बावजूद श्रीराम शास्त्री को मुखाग्नि देती है। एक साधारण, शोषित कबूतरा जैसी उपेक्षित जाति होने के वावजूद 'अल्माकबूतरी' आखिरकार 'अल्मा शास्त्री बन' समाज का उच्च मुकाम हासिल कर लेती है। इस प्रकार निम्न विशेषताओं से लैस अल्मा पाठक वर्ग को अभिभूत करती है और पाठक वर्ग से अपने प्रति सहानुभूति भी प्राप्त करती है। लेखिका के अनुसार यदि वह हंसमुख है तो परिस्थिति के अनुसार क्रोधी और विरोधी भी। उसके चेहरे की कोमलता, वर्णता, मधुरता सुन्दरता से जहॉ एक ओर उपन्यास का पुरूष वर्ग अभिभूत रहता है वहीं पाठक वर्ग भी लेकिन साथ ही उसकी दृढ़ता, चतुरता, कठोरता गभीरता से सतर्क भी। शायद वर्तमान समय में स्त्री जीवन की यह मांग भी है।

मैत्रेयीजी की नारियॉ गुप्ता जी वाली अबला नारी नहीं है, प्रसादजी वाली श्रद्धा या देवी भी नहीं है, वह एक मानवीय नारी है, अपनी तमाम अशक्तियों और सशक्तियों के साथ। ये टूटना नहीं जानती है, खुब लड़ती हैं, संघर्ष करती है।

परिस्थितियॉ का सामना डटकर करती हैं। उपन्यास के इन नारी पात्रों के बहाने मैत्रेयी पुष्पा नए मूल्यों को गढ़ती हैं। लेखिका उन्हीं मूल्यों को स्वीकार करती है, जो वर्तमान संदर्भो में भी प्रासंगिक हों। मैत्रेयी का लेखन और पात्र एक ऐसा विमर्श खड़ा करते हैं जो सिद्धान्तों से गढ़ा न होकर समाज की सच्चाईयों से पूरी तरह लैस हो तभी तो लेखिका ने दलित अल्मा को सामाजिक कुरितियों और असमर्थता के साथ–साथ राजनीतिक पर्दे पर भी उतारा है। लेखिका ने यहॉ वर्गभेद के साथ जीवन की वास्तविकताओं से अवगत कराया है। जिन्द्रगी के घूल–धक्कड़ से लड़ते हुए गिरकर भी फिर उठने का हौसला रखने वाली अल्मा इस बात का जीता – जागता उदाहरण है।

एक ओर मानसिक, शारीरिक उत्पीड़न, यातना, और अपमान का प्रत्यक्ष चित्रण कर उन्होंने इस उपन्यास में नारी शक्ति को सामने प्रस्तुत किया है तो दूसरी ओर आत्मविश्वास और हौसला दोनों को अल्मा के व्यक्तिव में जोड़ा। लाज – शर्म के पर्दे ऐसे फटे कि तन के साथ मन भी समाज के द्वारा बनाई गयी चौखटों को लांघकर एक नई संस्कृति की निर्मिति चाहने लगा। वास्तव में, यह उपन्यास समाज को परिवर्तित करने से उद्देश्य से लिखा गया है। पुष्पा जी समाज में व्याप्त उन नियमों में बदलाव चाहती हैं, जो स्त्री को एक सजी – संवरी गुड़िया मानते हैं, और मेरा मानना भी यही है। प्रत्येक स्त्री का अपना भी अस्तित्व होता है। और यह पात्र इसी अस्तित्व की अभिव्यक्ति है। चाहे उच्च वर्ग हो, मध्यवर्ग हो या निम्नवर्ग लेखिका परम्परा, रूढ़ि, पाखण्ड और यथा स्थितिवाद के स्थान पर आधुनिकता और परिवर्तन–शीलता को महत्व देती है। मैत्रेयी पुष्पा ऐसा समाज चाहती हैं जहॉ स्त्रियॉ सिर्फ इंसान हो न कि इस्तेमाल करने की चीज, जहॉ रूढ़िवादी मानसिकता न होकर समय के अनुसार परिवर्तित होने की विशाल आकांक्षा हो, बदलाव और परिवर्तनशीलता के बिना समाज धीरे–धीरे रूढ़ियों में जकड़ जाता है, और इसका सबसे ज्यादा प्रभाव नारियों पर ही पड़ता है। जीवन को कभी परखती तो कभी झेलती हुई 'अल्मा' सामाजिक रीतियों–कुरीतियों के अनेक पक्षों को अपने में समेटे हुए है। जब मैंने इस उपन्यास का अध्ययन किया तो मेरा मन इतनी गहरी पीड़ा से भर उठा कि कब तक हमारा समाज अपने स्वार्थ हेतु स्त्री का

इस्तेमाल करता रहेाग? मैत्रेयी के पात्र उस स्वाभाविकता को कहने में भी नहीं हिचकिचाते, जिसे छिपाने के लिए स्त्री को वाध्य किया जाता है। स्त्री की नियति की लक्ष्मण रेखाओं को लांघती मैत्रेयी पुष्पा की अल्मा एक नई कहानी बयां करती है। ''मैत्रेयी सच्चाईयों के भीतर छिपी वास्तविक सच्चाईयों से रू–ब–रू हो जिन टीसा–कचोटों अपमानों से दंशित होती है, उन्हें औसत भारतीय नारी की तरह अपने अंर्तमन में विधि की काई नहीं संजोती, बाहर उलीच देती हैं।''[2]

नारी को अपने 'स्व' को स्थापित करने के लिए इस समाज से लड़ना होगा। मैत्रेयी – पुष्पा की यह पात्र 'अल्मा' समाज को यही संदेश देती हैं। स्त्री के लिए लज्जा के बहुमूल्य गुण माना गया है। सेक्स के नाम पर उसका शोषण तो किया जाता है, लेकिन सेक्स की बात पर उसे चुप रहना भी सिखाया जाता है। हर रोज अल्मा को अपने वस्त्रहीन होने से अब कोई शर्म महसूस नहीं होती है। क्यों कि वह सोचती है कि ''सुरजभान तलाशी लेने के बहाने इस देह का रोम–रोम नाप चुका था। उसका दोस्त परसराम ने शरीर का अंग–अंग टटोला था। नंगापन पहली बार लगता है, बार–बार नहीं, इस बात को हर औरत जानती है। अल्मा खड़ी की गयी। समझ रही थी खड़े होकर ज्यादा नंगी हो जाती है देह..... । जो अंग छिपाने चाहिए वे उधड़े पड़े वो तो सिर झुकाकर भी क्या होगा?[3]

अंतः सम्पूर्ण अध्ययन के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि मैत्रेयी पुष्पा ने अल्मा के चरित्र के माध्यम से निम्नवर्गीय नारी की सहनशक्ति, बुद्धिमत्ता एवं विवेकशीलता का परिचय दिया है। नायिका 'अल्मा' अपने पिता की इच्छा पूरी करते–करते निरन्तर शोषित और पीड़ित होती गई । पिता के सपने के कारण वह अपने आपको अपने अस्तित्व को मिटाती – बर्बाद करती चली गई। समाज को इस असंगति और कुप्रथा से अवगत होना चाहिए कि किस प्रकार एक स्त्री के जीवन में आर्थिक स्थिति उसके शारीरिक स्थिति में तब्दील हो जाता है। कबूतरा स्त्रियॉ आर्थिक रूप से सक्षम नहीं हैं किंतु उनका शारीरिक और मानसिक स्तर अत्यंत दृढ़ है। कबूतरा जैसी समाज से बहिष्कृत नारियों की स्थिति को बड़े रोचक ढ़ग से फलक पर प्रस्तुत करने का साहस सिर्फ मैत्रेयी पुष्पा ही उठा सकती हैं, ये वो अपराधी जनजाति हैं जिनका अपना कोई अस्तित्व है न कोई पहचान ये लोग अपराधी भारतीय संविधान के मुताविक आज भी अस्तित्वहीन हैं इस दलित विषय का चयन कर मैत्रेयी पुष्पा ने यूँ ही कुछ नहीं लिख दिया है। बल्कि शोध जैसी बारिकियों से गुजर कर इन उपेक्षित स्त्रियों पर शिद्वत से लेखनी चलाई है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका अपराधी जनजाति की स्त्रियों के नारकीय जीवन का जीवन्त चित्र प्रस्तुत किया है। इस विषय पर यादव लिखते है– ''अल्मा इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि दलितो से आगे जाकर अपराधी जनजाति की दुनिया और विशेष कर स्त्री समाज को हमारे सामने खोलती हैं, कबूतरा जाति के लोगों कज्जा, चोर, डाकू की तरह देखते बेचते हैं। वे या तो जेलों में रहते हैं या तो जंगलों में – उनकी औरतें अफसरों या कज्जाओं की बिस्तरों पर ।''[4]

उपयुक्त संदर्भ के माध्यम से लेखिका कहना चाहती है कि समाज की पुरानी मानसिकता पर आधुनिक विचार धाराओं का प्रभाव नाम मात्र ही रहा है। चाहे वह अस्तित्व के लिए लड़ती हो न कि मान सम्मान और इज्जत के लिए तो कहीं – कहीं पर विधवा नारी ने परम्परागत परिवेश को परास्त किया है। इसका जीता जागता उदाहरण इदन्नम की मंदाकिनी है। दलित स्त्रियों का शोषण आदि काल से होता आ रहा है। लेखिका ने दलित स्त्रियों का अत्यन्त कारूणिक चित्रण मंदा के माध्यम से प्रस्तुतयिा है कि किस प्रकार ये स्त्रियॉ निर्दोष होती हुई भी केवल अपनी जाति के कारण अपनी जाति के पुरूषों के अपराधों और उच्च जाति की पुरूषों की वीभत्स इच्छाओं की सजा, अमानवीय यातना के रूप में अपने शरीर पर भोगतीं है। लेखिका मंदाकिनी के माध्यम से यही संदेश देती प्रतीत होती है कि किसी भी महान लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अन्याय के विरूद्ध आंदोलन में विजय प्राप्त करने के लिए स्त्री पुरूष के विचार से उपर उठकर परस्पर सहयोग वदृढ़ निश्चय की भावना होना अत्यंत अनिवार्य है। साहस मनुष्य का वह गुण है। जिसके कारण वह कठिन से कठिन वह कार्य भी अत्यन्त सरलता से कर लेता है। अपने भीतर शक्ति का आभाष होना ही साहस को जन्म देना है। यहॉ मैं एक बात कहना चाहूँगी कि कोई किसी को अवसर नहीं देता न हीं पुरूष ही पुरूष को और न हीं एक नारी ही नारी को बल्कि अवसर सभी को जन्म से मिला हुआ है।

संदर्भ

1. मैत्रेयी पुष्पा – अल्मा कबूतरी पृष्ठ संख्या 373
2. पहल अंक –73 पृ0 सं0–256
3. मैत्रेयी पुष्पा – अल्मा कबूतरी पृ0 सं0–361
4. राजेन्द्र यादव – आदमी की निगाह में, नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन संस्करण 2007 ई0 पृ0सं0–236